इकाई 11 मोहम्मद इकबालः समुदाय, धर्म और आधुनिकता*

संरचना

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 समुदाय

11.2.1 एक वैश्विक धार्मिक समुदाय की ओर

11.2.2 राष्ट्रवाद की आलोचना

11.3 धर्म

11.3.1 प्रेम और शक्ति का धर्म

11.3.2 आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में इस्लाम

11.3.3 धर्म और राजनीति

11.4 आधुनिकता

11.5 आकलन

11.6 सारांश

11.7 संदर्भ

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

यह इकाई आपको इकबाल के विचारों की मुख्य धाराओं से परिचित कराएगी। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप इस योग्य हो जाएंगेः

- व्यापक राष्ट्रीय समुदाय से अलग समुदाय के बारे में, इकबाल के विचारों की व्याख्या करने में
- धर्म पर, इकबाल की अनूठी अवधारणा के बारे में
- आधुनिकता और इकबाल जैसे विचारकों पर इसके गहरे प्रभाव के बारे में
- भारतीय उपमहाद्वीप में इकबाल के समकालीन महत्व को जानने में

*डॉ अमितांशु वर्मा, वरिष्ठ शोधकर्ता, सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज, नई दिल्ली

11.1 प्रस्तावना

इकबाल का जन्म 1873 ईस्वीं में, ब्रिटिश भारत के, सियालकोट में उन धर्मनिष्ठ माता–पिता के घर में हुआ था जिन्होंने उन्हें बचपन में इस्लाम की शिक्षा प्रदान की थी। उन्होंने, अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक इस्लामिक मदरसे के साथ–साथ ब्रिटिश तर्ज पर अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने वाले एक मिशनरी स्कूल में भाग लिया। वे स्नातक की पढ़ाई के लिए लाहौर के सरकारी कॉलेज गए जहाँ 1899 में दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी साहित्य और अरबी में डिग्री प्राप्त करने के बाद, उन्हें दर्शनशास्त्र विभाग में व्याख्याता के रूप में नियुक्त किया गया। इस दौरान इकबाल ने शायर के तौर पर भी अपना नाम बनाया। 1904 में उन्होंने *तराना–ए–हिंद* की रचना की जिसे इसकी पहली पंक्तियों *सारे जहां से अच्छा* के नाम से जाना जाता है और जिसने धार्मिक पहचान से परे, हिंदुस्तान और उसके लोगों के लिए प्रेम का संदेश दिया। यह गीत आज भी भारत में एक लोकप्रिय राष्ट्रवादी रचना के रूप में गाया जाता है। इकबाल आगे की पढ़ाई के लिए, 1905 में यूरोप चले गए। उन्होंने कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज से कानून में डिग्री और म्यूनिख विश्वविद्यालय से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। 1908 में भारत लौटने के पश्चात्, बाद में इकबाल ने अपना शिक्षण करियर छोड़ दिया और लाहौर, जिस शहर में उन्होंने अपना जीवन बिताया, में कानून का अभ्यास करना शुरू कर दिया। जल्द ही वह भारतीय उपमहाद्वीप में एक कवि और चिंतक के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

यूरोप में, इकबाल ने पश्चिम के प्रमुख दार्शनिकों के साथ–साथ समकालीन प्रभावशाली इस्लामी विचारकों के विचारों को जाना। यह यूरोप ही था जहाँ अल्लामा इकबाल ने सभ्यता के सवालों पर व्यवस्थित तरीके से विचार करना शुरू किया। यद्यपि वे, *नीत्शे* और *बर्गसन* जैसे, पाश्चात्य दार्शनिकों से गहन तौर पर प्रभावित थे फिर भी उन्होंने प्रमुख पाश्चात्य राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वरूपों की समालोचना करना शुरू कर दिया। सबसे उल्लेखनीय तौर पर, वह राष्ट्रीय पहचान की विभाजनकारी प्रकृति को देख सकते थे। इकबाल ने इस्लाम के सार्वभौमिक भाईचारे और नैतिकता के विचारों में, राष्ट्रों द्वारा उत्पन्न विभाजन और आधुनिकता द्वारा उत्पन्न नैतिक दुविधाओं का समाधान देखा।

भारत लौटने पर, इकबाल ने खुद को निम्न सवालों के प्रति समर्पित कर दियाः विभाजनकारी राष्ट्रवाद के बजाय सार्वभौमिक इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित राजव्यवस्था और समाज के प्रतिरूप की वकालत कैसे करें? आधुनिकता के आलोक में इस्लाम और मुस्लिम समुदाय को कैसे समझें? आधुनिकता के साथ क्या समस्याएं हैं?

समकालीन भारत और पाकिस्तान में प्रायः इकबाल को पाकिस्तान के आध्यात्मिक पिता के रूप में चित्रित किया जाता है। इकबाल 1938 में अपनी मृत्यु तक, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग सहित कई मुस्लिम संगठनों से आयोजक के तौर पर जुड़े रहे। 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में इकबाल ने, मुसलमानों के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए, एक राजनीतिक प्रारूप के अपने विचार को प्रस्तुत किया। अपने भाषण में उन्होंने भारत के उत्तर–पश्चिम में इस्लामी तर्ज पर एक स्वायत्त राज्य की कल्पना की। आमतौर पर,

इस कल्पना को पाकिस्तान के विचार का *जन्म* माना जाता है। फिर भी इकबाल के लिए ऐसा राज्य, उपमहाद्वीप में, न तो अन्य धर्मों के प्रति उनकी घृणा के कारण और न ही एक अलग राष्ट्र के लिए उसके प्रेम के कारण वांछनीय था बल्कि उनका मानना था कि इस्लामी राजव्यवस्था और समाज ही, पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन के खिलाफ जो लोगों को राष्ट्रीय आधार पर विभाजित करते हैं, मनुष्य के सम्पूर्ण विकास और अंततः सार्वभौमिक भाईचारे का नेतृत्व कर सकती है। विद्वानों में इकबाल को विभिन्न रूपों, 'इस्लामवादी,' 'सुधारक,' और 'तीसरी दुनिया के राष्ट्रवादी' में देखने की प्रवृत्ति मिलती है। इस प्रवृति के कारण इकबाल को एक निश्चित वैचारिक प्रकोष्ठ में रखने में कठिनाई प्रतीत होती है। यह महत्वपूर्ण है कि एक अलग राष्ट्र की मांग के कारण, अल्लामा इकबाल के दार्शनिक, धार्मिक और सभ्यतागत सरोकारों की सम्पूर्ण श्रृंखला को कम नहीं आंका जाना चाहिए।

11.2 समुदाय

रुमुज–ए–बेखुदी, द सीक्रेट्स ऑफ सेल्फलेसनेस (निःस्वार्थत्ता का रहस्य) में, इकबाल लिखते हैं:

> यह एकता हमारे हाथ से न जाने पाए,
>
> और हम इसे अनंत काल तक सहते हैं। . . .
>
> हमारा सार किसी स्थान से बंधा नहीं है;

इकबाल के अनुसार, मुस्लिम समुदाय (*मिल्लत*) के बीच एकता सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक और आध्यात्मिक लक्ष्य है। जहाँ तक कि इकबाल जाति, जन्म स्थान, पेशा, भाषा और अन्य पहचान के आधार पर समुदाय के विभिन्न रूपों को मान्यता प्रदान करते हैं फिर भी उनके लिए सर्वोच्च समुदाय वह है जो एक ईश्वर और इस्लाम के सिद्धांतों में निष्ठा पर आधारित है।

आध्यात्मिक आदर्श के तौर पर, समुदाय ने व्यक्ति को सुरक्षा, संरक्षण और आध्यात्मिक लक्ष्य प्रदान किए। चूंकि इकबाल ने व्यक्तिगत अहम् *(खुदी)* के आध्यात्मिक विकास को, एक व्यक्ति के लिए, सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में देखा और आध्यात्मिक तर्ज पर संगठित समुदाय ने, अहम् के विकास के लिए, सबसे उपयुक्त परिस्थितियां प्रदान कीं। उनके अनुसार, इस्लामी नैतिकता पर संगठित समुदाय ने व्यक्ति की आध्यात्मिक क्षमताओं के पूर्ण विकास को सुनिश्चित किया। यदि इकबाल के विचार के एक हिस्से ने, आध्यात्मिक निर्वाण के साधन के रूप में, व्यक्तिगत अहम् (*खुदी*) के विकास पर जोर दिया तो दूसरे हिस्से ने उस बात पर बल दिया जो, इस्लाम के नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित, संगठित समुदाय के सामाजिक अहम् (*बेखुदी*) के साथ व्यक्तिगत अहम् का सामंजस्य स्थापित करता है।

इकबाल के अनुसार, आंतरिक तौर पर, किसी व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास आध्यात्मिकता आधारित संगठित समुदाय के साथ जुड़ा हुआ है। यह देखना आसान है कि समुदाय के ऐसे संगठन को, सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में, इस्लामी नैतिकता की व्यवस्था के कार्यान्वयन की आवश्यकता होगी। इस प्रकार इकबाल के

अनुसार, एक पूर्ण रूप से जीवंत इस्लामी समुदाय उसी समय में शासनव्यस्था का आधार है। पाश्चात्य चिंतन प्रणालियाँ, जो व्यक्तिगत धर्म को एक निजी क्षेत्र और राजनीति को एक सार्वजनिक क्षेत्र के रूप में विभेदित करती है, के विपरीत इकबाल के अनुसार, व्यक्ति के विकास में व्यक्तिगत और सार्वजनिक को अलग नहीं किया जा सकता है। उनके अनुसार व्यक्तिगत आध्यात्मिक लक्ष्य तथा सामाजिक और नागरिक कानून, सभी, समान धार्मिक और आध्यात्मिक नैतिकता को प्रकट करने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार इस्लामी नैतिकता की तर्ज पर, सामाजिक और राजनीतिक रूप से एक आदर्श समुदाय संगठित होगा।

11.2.1 एक वैश्विक धार्मिक समुदाय की ओर

चीन और अरब हमारा है, हिंदुस्तान हमारा है—

हम मुसलमान हैं, हमारी मातृभूमि पूरी दुनिया है।

— *तराना—ए—मिल्लत* से, समुदाय का गीत, 1910

यह सुस्पष्ट था कि इकबाल के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण धार्मिक समुदाय (*उम्मा या मिल्लत*) था जो राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और तत्कालिक पहचानों से बढ़कर था। इस्लाम ने वर्ग, जाति, रंग और नस्लीय विभेदों के बावजूद मानवीय भाईचारे के मूल्य को महत्ता की पेशकश की। इकबाल ने इसमें एक समतामूलक और सामंजस्यपूर्ण समाज का आधार देखा। इसके अलावा, मनुष्य द्वारा ईश्वर की खोज पर बल देते हुए, इकबाल ने रेखांकित किया कि यह भाईचारे और समानता के इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित समाज में संभव हो सकता है। एक समाज, जो धार्मिकता के आधार पर संगठित होता है, जो मानवीय समानता को मान्यता देता है, जो वर्ग और जाति के विभेदों को खारिज करता है और ईश्वर के अलावा किसी की भी श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं करता है, वह व्यक्ति को अपनी सर्वोत्तम क्षमता विकसित करने और आध्यात्मिक विकास प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम परिस्थितियां प्रदान करता है। इसी कारण से, अल्लामा इकबाल *राष्ट्रवाद* के *आलोचक* थे जिसने मानवता को जाति, धर्म या भाषा के आधार पर विभाजित किया। एक इस्लामी समुदाय समय और स्थान से सीमित नहीं है जबकि एक राष्ट्रीय समुदाय राजनीति, क्षेत्र और इतिहास की अनिश्चितताओं के अधीन है। जहाँ तक कि एक राष्ट्र, समाज के तात्कालिक संगठन के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं बावजूद इसके एक आदर्श राष्ट्र को उच्च आध्यात्मिक सिद्धांतों के अनुसार संगठित वैश्विक इस्लामी समुदाय के अधीन होना चाहिए।

इकबाल के धार्मिक समुदाय में कई विशेषताओं की पहचान की जा सकती है। इकबाल का समुदाय *सार्वभौमिक* है क्योंकि यह, सभी लौकिक सीमाओं से परे, मनुष्यों के बीच एक बंधन है। समुदाय न केवल आध्यात्मिक है बल्कि एक ईश्वर में विश्वास पर आधारित और 'भौतिक' भी है क्योंकि यह सामाजिक संबंधों और कानूनों को, इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार व्यवस्थित करना चाहता है। समुदाय ईश्वर के सिद्धांतों और न्याय की प्राप्ति के लिए तैयार है। यह एक ऐसा समुदाय है जो *गैर—क्षेत्रीय* और *अंतर्राष्ट्रीयतावादी* है क्योंकि इसकी पहचान किसी देश से संबंधित नहीं है। इकबाल द्वारा कल्पित समुदाय *विशिष्ट* होने के बजाय *समावेशी* होना चाहता है क्योंकि यह उन सभी के लिए खुला है जो इस्लाम का अनुसरण करना

चाहते है। इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित एक वैश्विक समुदाय की सिफारिश को *सार्वभौमिक–इस्लामवाद* के रूप में जाना जाता है।

11.2.2 राष्ट्रवाद की आलोचना

वैश्विक इस्लामी समुदाय, *मिल्लत या उम्मा,* की अल्लामा इकबाल की वकालत, राष्ट्रवाद की उनकी व्यापक आलोचना से प्रेरित थी। राष्ट्रवाद का विचार, जिसमें मनुष्य राजनीतिक रूप से खुद को भाषा, क्षेत्र, इतिहास या नस्ल के आधार पर राष्ट्रों में संगठित करता है, 17वीं शताब्दी में यूरोप में विकसित हुआ। राष्ट्रवाद के विचार से पहले, मनुष्य विभिन्न स्थानीय समुदायों (जाति, जनजाति, क्षेत्र या पेशे) के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय समुदायों (धर्मों के मामले में इस्लाम या ईसाई धर्म जैसे) के चारों ओर संगठित थे लेकिन राजनीतिक रूप से ऐसे साम्राज्य हुआ करते थे जिनकी शासन व्यवस्था समय के साथ, आक्रमणों, क्रांतियों आदि के साथ बदलती रहती थी। लोगों की निष्ठा और पहचान की भावना एक राजनीतिक समुदाय से संबंधित होने के बजाय एक धर्म, एक जाति, एक पंथ, एक भाषा, एक क्षेत्र या पेशे से अधिक उठी। उदाहरण के लिए, औपनिवेशिक शासन से पहले, 'भारतीय' केवल एक वर्णनात्मक शब्द था जो भारतीय उपमहाद्वीप से संबंधित लोगों, जो विभिन्न धर्मों, भाषाओं, राजनीतिक साम्राज्यों में विभाजित थे, को संदर्भित करता था न कि राजनीतिक रूप से संगठित राष्ट्र–राज्य को। भारतीय पहचान से किसी एक देश के प्रति देशभक्ति या प्रेम की भावना पैदा करने की उम्मीद नहीं की गई थी क्योंकि कुछ भी अस्तित्व में नहीं था।

राष्ट्रवाद को, इकबाल, एक विदेशी अवधारणा बताते है। यह एक ऐसा विचार है जो पश्चिम में पैदा हुआ और फिर यूरोप द्वारा उपनिवेशवाद और आर्थिक प्रभुत्व के माध्यम से पूर्व पर थोपा गया। वर्तमान में, एशिया के लोगों से, यह अपेक्षा की जाती थी कि वे स्वयं को राष्ट्रीयताओं के आधार पर संगठित करें। इसके अलावा, लोगों से देशभक्ति की भावना महसूस करने और अपने राष्ट्र–राज्यों, राजनीतिक समुदाय से प्यार करने और स्वयं को अन्य राष्ट्रीयताओं से हटकर दिखाने की उम्मीद की गई थी। एक बार, राष्ट्र–राज्यों के राजनीतिक समुदाय में व्यक्त, राष्ट्रीयताओं में गठित होने के बाद लोगों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने राष्ट्र–राज्यों पर गर्व महसूस करें और अपने राष्ट्रों के विकास के संदर्भ में सोचें। परिभाषा के अनुसार, भाषा या इतिहास के आधार पर राष्ट्र और राष्ट्रीयताएं विशिष्ठ पहचान थीं। इकबाल ने राष्ट्रवाद को इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन के रूप में देखा। जबकि इस्लामी समुदाय ने नस्ल, संपत्ति, जाति, भाषा और क्षेत्र के विभेदों से परे सार्वभौमिक भाईचारे के आधार की पेशकश की परन्तु राष्ट्रवाद ने लोगों को विभाजित किया और एक दूसरे को प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखने का कारण बना। एशियाई लोगों पर विचारधारा की बढ़ती पकड़ ने एक अखिल–इस्लामिक समुदाय के विचार को खतरे में डाल दिया जिसने लोगों को, उनके विश्वास और आध्यात्मिक विकास के लिए, सार्वजनिक खोज के आधार पर एकजुट करने की मांग की। राष्ट्रवाद ने धर्म को निजी दायरे में ले लिया जबकि इस्लाम ने इस बात की वकालत की कि धर्म केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत विश्वास का मामला नहीं है बल्कि समाज को धार्मिक सिद्धांतों के साथ संगठित किया जाना चाहिए। इकबाल को डर था कि धर्म को निजी दायरे में लाकर राष्ट्रवाद ने, अंततः, सार्वजनिक जीवन में नास्तिकता को प्राथमिकता दी। उन्होंने नास्तिक

राष्ट्रवाद के उदय के गंभीर परिणाम के रूप में यूरोप में ईसाई धर्म के पतन की ओर इशारा किया।

तो क्या इकबाल ने राष्ट्रवाद को पूरी तरह खारिज कर दिया? इकबाल ने माना कि लोग अपनी भूमि और समाज के प्रति प्रेम महसूस करते हैं और इसके लिए अपने जीवन का बलिदान देने को तैयार हैं। लेकिन राष्ट्रवाद स्पष्ट रूप से अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम से कहीं बढ़कर था। राष्ट्रवाद जैसे–जैसे यूरोप में उभरा उसेन चर्च और राज्य को अलग करने की परिकल्पना की और अन्य सभी पहचानों से ऊपर राष्ट्रीय पहचान को प्राथमिकता दी। इकबाल ने स्पष्ट रूप से अंतर–राष्ट्रीय मुस्लिम समुदाय, *मिल्लत*, के प्रति निष्ठा को अपने देश के प्रति किसी की निष्ठा से अधिक रखा। 1930 में इलाहाबाद के अपने संबोधन में, इकबाल ने वैसे तो एक अलग मुस्लिम राष्ट्र की मांग नहीं की परन्तु भारत के भीतर ही एक क्षेत्रीय विभाजन की मांग की जो कि सार्वभौमिक भाईचारे के लिए प्रतिबद्ध इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार संगठित किया जा सकता है। वास्तव में, इकबाल का मानना था कि यदि, भारत के मुसलमानों को, इस तरह का क्षेत्रीय विभाजन मिलता है तो इससे भारत के प्रति उनकी देशभक्ति बढ़ेगी जैसा कि आई. सिंह सेविया ने अपनी पुस्तक *द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ मुहम्मद इकबालः इस्लाम एंड नेशनलिज्म इन लेट कॉलोनियल इंडिया* में रेखांकित किया हैं। यदि इकबाल के पास राष्ट्र की अवधारणा थी तो वह इस्लामिक *मिल्लत* की थी जो कि अंतर–क्षेत्रीय और एक ईश्वर में विश्वास पर आधारित थी।

बोध प्रश्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) इस्लामी समुदाय, अन्य समुदायों से किस प्रकार भिन्न है? इकबाल के लिए यह क्यों महत्वपूर्ण है?

....

....

....

....

....

....

2) इकबाल द्वारा अभिलक्षित इस्लामी समुदाय की विशेषताएं क्या हैं?

....

....

....

....

....

....

3) राष्ट्रवाद के खिलाफ, इकबाल की मुख्य आलोचनाएँ क्या हैं?

....

....

....

....

....

....

....

11.3 धर्म

यूरोपीय आधुनिकता के आलोचक होने के साथ–साथ, इकबाल ने इस्लाम का नए सिरे से अध्ययन और व्याख्या का भी आह्वान किया। 1930 में, उन्होंने इस्लाम पर, अपने व्याख्यानों को *द रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ रेलिजियस थॉट इन इस्लाम* नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। उन्होंने लिखा हैः

> पिछले पांच सौ वर्षों के दौरान इस्लाम में धार्मिक विचार व्यावहारिक रूप से अपरिवर्तित रहा है ... इस कारण, आधुनिक मुस्लिम के सामने कार्य असीमित है। उसे अतीत को पूरी तरह से छोड़े बिना, इस्लाम की सम्पूर्ण व्यवस्था पर पुनर्विचार करना होगा। ... हमारे लिए एकमात्र रास्ता, आधुनिक ज्ञान को सम्मानजनक लेकिन स्वतंत्र दृष्टिकोण के साथ प्राप्त करना और उस ज्ञान के आलोक में इस्लाम की शिक्षाओं की सराहना करना है भले ही, हमारे रास्ते उन लोगों से अलग हो जाएं जो हमसे पहले गए हैं।

मोहम्मद इकबाल शिक्षित मुस्लिम बुद्धिजीवियों के समूह में से थे जिन्होंने अपने स्वतंत्र तर्क के माध्यम से इस्लाम की पुर्नव्याख्या, *इतिहाद* के इस्लामी सिद्धांत, को लागू करके आधुनिक समय की जरूरतों के अनुसार इस्लाम का अध्ययन और पुर्नव्याख्या करने के अपने अधिकार पर जोर दिया। इकबाल मौलाना वर्ग से संबंधित नहीं थे और उन्होंने पारंपरिक इस्लामी प्राधिकरणों और संगठनों की व्यापक आलोचना की जिनमें से कुछ ने दावा किया कि उनके जैसे पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवियों को इस्लाम की पुर्नव्याख्या करने का कोई अधिकार नहीं है।

इस्लाम की उनकी कट्टरपंथी पुर्नव्याख्या के एक उदाहरण पर पहले ही ऊर्पयुक्त में चर्चा की जा चुकी है जहां इकबाल इस्लाम को केवल एक व्यक्तिगत या निजी धर्म के रूप में न देखते हुए एक शासन व्यवस्था और समाज की एक प्रणाली के रूप में देखते हैं जो नास्तिक राष्ट्रवाद पर आधारित राजनीतिक संगठन की यूरोपीय प्रणाली के विकल्प की पेशकश करता है। इसके अलावा, इकबाल ने, इस्लामी विश्वास के बारे में अपना दृष्टिकोण विकसित किया जिसमें ईश्वर के प्रति प्रेम, आत्म–साक्षात्कार के लिए व्यक्तिगत प्रयास के साथ–साथ, इस्लामी भाईचारे के सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित, समाज और इस्लामी कानूनों पर आधारित एक शासन व्यवस्था पर जोर दिया गयझं

11.3.1 प्रेम और शक्ति का धर्म

इकबाल के शब्दों में स्वयं या अहम् या *खुदी*, ईश्वर के प्रति अपने अदम्य प्रेम के माध्यम से विकसित होता है। अपनी किताब *असरार–ए–खुदी, द सीक्रेट्स ऑफ द सेल्फ* में इकबाल लिखते हैं:

प्रेम उसे संसार को आलोकित करने का निर्देश देता है।
प्रेम न तलवार से डरता है, न खंजर से,
प्रेम न जल से, न वायु से और न पृथ्वी से पैदा होता है।
प्रेम दुनिया में शांति और युद्ध लाता है,
प्रेम जीवन का उद्गम स्थल है,
प्रेम मृत्यु की चमकती तलवार है।
सबसे कठोर चट्टानें प्रेम की नजरों से कांपती हैं:
परमेश्वर से प्रेम अंत में पूर्ण रूप से परमेश्वर बना देता है।

इकबाल के अनुसार हृदय और प्रेम का अधिकार क्षेत्र, *इल्म* या *अक्ल* जैसे तार्किकता के साधनों पर आधारित पाश्चात्य सभ्यता के मूल्यों के लिए एक मारक के रूप में कार्य करता है। पाश्चात्य सभ्यता ने संवेदनाओं और जुनून के बजाय मन और तर्क को प्राथमिकता दी। इकबाल ने बताया कि केवल तार्किकता से ही चीजों की पूरी समझ नहीं बनाई जा सकती है। इससे असंतोष का कारण बनाया क्योंकि यह लगातार स्वयं के बाहर सत्य की खोज कर रहा था। यह संवेदनाओं और प्रेम के माध्यम से इंद्रिय बोध है जिसने स्वयं को न केवल समझने की अनुमति दी बल्कि सत्य को महसूस करने की भी अनुमति दी। तार्किकता पश्चिम द्वारा पूर्व के औपनिवेशीकरण की एक विशेषता थी। पश्चिम के उपनिवेश से खुद को मुक्त करने के लिए, इकबाल ने दिल के दायरे में वापसी की वकालत की। यह प्रेम और संवेदनायें थी जिसने स्वयं को विकसित करने और धार्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए महत्वपूर्ण चिंगारी प्रदान की। सिर्फ तर्क ने, किसी को भी ईश्वर की खोज के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। प्रेम के माध्यम से ही व्यक्ति, विज्ञान की भौतिक दुनिया से बाहर निकला तथा स्वयं को और दुनिया को पूरी तरह समझ पाया। इकबाल के अनुसार प्रेम, इस्लाम के रूढ़िवादी और कानूनी संस्करणों का जवाब भी था जो धार्मिक भावना के बजाय पत्र पर जोर देता था। यह ईश्वर के प्रति प्रेम था जिसने निष्क्रिय रूप से नियमों का पालन करने के बजाय सक्रिय रूप से आध्यात्मिकता की खोज और अनुसरण किया।

इकबाल *रूमी* के कार्यों से काफी प्रभावित थे। उन्होंने धार्मिक जीवन के एक वैधानिक परिक्षेत्र के रूप में, आध्यात्मिक अनुभव को मान्यता दी। आध्यात्मिक अनुभव की अपनी मान्यता में, इकबाल ने स्वीकार किया कि वह *सूफीवाद* से प्रभावित थे। फिर भी, इकबाल सूफीवाद के मुखर आलोचक थे। सूफीवाद ने हर वस्तु में ईश्वर का प्रतिबिंब देखा और उपमहाद्वीप के पंथवादी धर्मों, जैसे हिंदू धर्म, के प्रभाव का प्रदर्शन किया। सूफी दर्शन ने इस बात की हिमायत की कि प्रेम (*फना*) के माध्यम से स्वयं को नकारना, ईश्वर को प्राप्त करना है। जबकि इकबाल ने प्रेम और

आध्यात्मिक अनुभव को पहचाना और उन्होंने सूफीवाद के स्वयं की उपेक्षा पर जोर देने की आलोचना की। इकबाल के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति और आध्यात्मिक अनुभव ने, स्वयं की उपेक्षा नहीं की। बल्कि यह स्वयं की एक मजबूत, स्वतंत्र और सक्रिय भावना (*खुदी*) थी जिसने व्यक्ति को ईश्वर की खोज के लिए प्रेरित किया। और यहां तक कि ईश्वर की उपस्थिति में भी व्यक्ति ने स्वयं की भावना नहीं खोई। इकबाल ने सूफीवाद को *जीवन को नकारने* वाला बताते हुए आलोचना की और इस्लाम के एक ऐसे दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया जो क्रिया–उन्मुख और आत्म–स्वीकृति वाला था। उन्होंने कहा कि सूफीवाद का जीवन को नकारने वाला चरित्र बौद्ध धर्म और ईसाई धर्म के समान था। दूसरी ओर, इस्लाम ने आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में मजबूत व्यक्तिगत कार्यवाही का आह्वान किया। इकबाल के अनुसार, प्यार और आध्यात्मिक अनुभव ने नकारने के बजाय क्रियाशीलता को प्रेरित किया। इकबाल ने इस्लाम को एक ऐसे धर्म के रूप में देखा जिसने स्वयं को नकारने के बजाय, स्वयं और समाज दोनों को, सशक्त बनाया। इकबाल ने धर्मनिष्ठा की तलाश में स्वयं को खोने के बजाय, *बेखुदी* के विचार को समाज के धार्मिक आध्यात्मिक सिद्धांतों के साथ सामंजस्य बिठाने के रूप में पुर्न–परिभाषित किया। इस प्रकार, इकबाल के लिए इस्लाम एक ऐसा धर्म था जो प्रेम और शक्ति के जुड़वां सिद्धांतों पर कार्य करता था।

11.3.2 आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में इस्लाम

इकबाल उस समय में आये जब विभिन्न इस्लामी विद्वान और मौलवी पाश्चात्य ज्ञान प्रणालियों और संस्थानों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के आलोक में इस्लाम के विचारों को विकसित कर रहे थे। पश्चिमी दुनिया में, ईश्वर और धर्म के विचार को गंभीर चुनौती दी गई थी। विज्ञान के विकास के माध्यम से, दुनिया का आधार दैवीय मध्यस्थता के बजाय भौतिक विकास प्रतीत होता था। यूरोप में ज्ञानोदय के विचार ने मनुष्य को, मानव विकास के केंद्र में रख दिया। यह माना जाने लगा कि यह मनुष्य की ही प्रतिभा थी जिसने कला, साहित्य, युद्ध, समाज, सभ्यता आदि का निर्माण किया। पश्चिमी समाज धर्म को, न केवल एक व्यक्तिगत मामले के रूप में देखने लगे थे बल्कि भरोसे की कमी के कारण, हार भी रहे थे। ईसाई धर्म ने, जनता का धर्म के रूप में, अपनी पकड़ खो दी थी। संस्थाओं और समाजों को इस तरह से संगठित किया जा रहा था कि धर्म के बजाय व्यक्ति को केंद्र में रखा जाए। व्यक्ति के अधिकार और स्वतंत्रता किसी भी रूप मे सर्वोच्च थी।

उपनिवेशवाद और उससे जुड़ी संस्थायें, ज्ञान के इन नए रूपों को पूर्व में लाये। इसी दृष्टिकोण में, भारत में भी बुद्धिजीवियों ने अपने धार्मिक विचारों का पुनर्मूल्यांकन करना शुरू कर दिया। औपनिवेशिक काल के प्रमुख इस्लामी विद्वानों ने इस बात पर चिंतन और तर्क किया कि आधुनिक समय में इस्लाम का स्थान क्या था। सैयद अहमद खान जैसी शख्सियत, इस विचार के पक्ष में थे कि विज्ञान और इस्लाम के बीच कोई विरोधाभास नहीं था और इस्लामी ज्ञान की व्याख्या आधुनिक ज्ञान के आलोक में की जानी चाहिए। सैयद अहमद खान को कई लोगों ने 'आधुनिकतावादी' के रूप में वर्णित किया था। दूसरी ओर, मोहसिन–उल–मलिक और शिबली जैसे बुद्धिजीवियों ने तर्क दिया कि धर्म और विज्ञान के क्षेत्र अलग–अलग थे और किसी को भी उन्हें एक–दूसरे के साथ नहीं मिलाना चाहिए। यद्यपि अंतिम विश्लेषण में,

इन दोनों विचारधाराओं ने जोर देकर कहा कि इस्लाम आधुनिक ज्ञान और आधुनिक संस्थानों के साथ सह–अस्तित्व में हो सकता है। एक दृष्टिकोण ने आधुनिक ज्ञान और इस्लाम की अनुकूलता पर बल दिया जबकि दूसरे ने इस बात पर जोर दिया कि इस्लाम और आधुनिक ज्ञान पूरी तरह से अलग क्षेत्र हैं। इस प्रकार, ये दोनों दृष्टिकोण, ज्ञान और संस्थानों के धर्मनिरपेक्ष रूपों के साथ, सीधे टकराव में आने से बचते रहे।

दूसरी ओर, अल्लामा इकबाल ने इन *दोनों* दृष्टिकोणों की आलोचना की। इकबाल बुद्धिजीवियों के उस समूह से संबंधित थे जिन्होंने तर्क दिया कि इस्लाम में न केवल व्यक्तिगत विश्वास और आचरण के मूल तत्व मौजूद हैं बल्कि शासन और राजव्यवस्था के सिद्धांत भी हैं। अपनी पुस्तक *रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ इस्लामिक थॉट* में इकबाल ने यह स्थापित करने की कोशिश की कि पवित्र कुरान अनुभव के अनुभूतिमूलक सार को मान्यता देता है जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान था, इस प्रकार बाहरी वस्तुओं की अनुभूति के आधार पर, एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण इस्लाम में बहुतहद तक वैध है। इसके अलावा, कुरान ने अनुभव के एक अन्य क्षेत्र का खुलासा किया जो व्यक्ति के भीतर मौजूद है। धार्मिक या आध्यात्मिक अनुभव उतना ही वास्तविक है जितना कि अनुभूतिमूलक अनुभव। इकबाल के अनुसार, जबकि, अधिकांश अन्य धर्म स्वयं को धार्मिक या आध्यात्मिक अनुभव के साथ संबंधित रखते हैं तो वही इस्लाम अनुभव के इन दोनों क्षेत्रों से संबंधित है और दोनों को मान्यता देता है। इकबाल ने लिखाः

> 'हृदय' एक प्रकार का आंतरिक अंर्तज्ञान या अंतर्दृष्टि है जो, रीमा के सुंदर शब्दों में, सूर्य की किरणों के समान खिलती है और हमें इंद्रिय–अनुभव के लिए खुले पहलुओं के अलावा वास्तविकता के अन्य पहलुओं के संपर्क में लाती है। कुरान के अनुसार, यह कुछ ऐसा है जो 'देखता' है और इसकी सूचना, अगर ठीक से व्याख्या की जाए, तो कभी भी झूठी नहीं होती है। हालांकि, हमें इसे एक आध्यात्मिक विशिष्ठ संकाय के रूप में नहीं मानना चाहिए; बल्कि यह वास्तविकता से निपटने का एक तरीका है जिसमें संवेदना, शब्द के क्रियात्मक अर्थ में, कोई भूमिका नहीं निभाती है। फिर भी, इस प्रकार, हमारे लिए खोला गया अनुभव का दृश्य उतना ही वास्तविक और ठोस है जितना कि कोई अन्य अनुभव।

अनुभवजन्य अनुभव का रसहीन सांसारिक सार इस्लामी नैतिक सिद्धांतों द्वारा प्रकाशित और निर्देशित है। इसलिए, धार्मिक आध्यात्मिक सार तथा राजनीति और नागरिक समाज के सांसारिक सार के बीच स्पष्ट अंतर नहीं हो सकता है। इकबाल के अनुसार इस्लाम ने इसमें आस्था रखने वालों के बीच, न केवल समानता पर आधारित सामाजिक और राजनीतिक संगठन के सिद्धांतों की पेशकश की बल्कि इकबाल के विचार में, ऐसे सामाजिक और राजनीतिक संगठन की स्थापना में, सक्रिय रूप से, भाग लेना आवश्यक है जो इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित और प्रोत्साहित हो। यह इस्लामी सार्वभौमिकता और भाईचारे का प्रकाश था जो आधुनिक समाज और इसकी संस्थाओं के व्यक्तिवाद और स्वार्थ को विफल कर सकता था।

11.3.3 धर्म और राजनीति

जैसा कि पहले के पद्याशों में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि इकबाल ने, व्यक्ति में उच्चतम् चेतना के सर्वोत्तम विकास के लिए, एक इस्लामी समाज और राज व्यवस्था के महत्व पर जोर दिया। इसने इस आवश्यकता पर बल दिया कि मुसलमान सक्रिय रूप से अपने राजनीतिक हितों की रक्षा करें क्योंकि धर्म को केवल निजी क्षेत्र के रूप में सीमित नहीं किया गया था। इकबाल के विचार में, सरकार का गणतंत्रात्मक स्वरूप, इस्लामी सिद्धांतों को एक राजव्यवस्था में व्यक्त करने के लिए सर्वथा उपयुक्त था। कुरान के अनुसार, *इज्मा* या सर्वसम्मति, कानून और विधान का एक प्रमुख स्रोत है। इकबाल ने, *इज्मा* के सिद्धांतों की व्याख्या, एक लोकतांत्रिक विधायी व्यवस्था के रूप में की। इकबाल ने तर्क दिया कि आधुनिक समय में *इज्मा* के वास्तविकीकरण का मतलब, मुसलमानों की, विधानसभाओं से है। *रिक्न्सट्रक्शन ऑफ इस्लामिक थॉट* में इकबाल लिखते हैंः

> हालाँकि, यह ध्यान देना बेहद संतोषजनक है कि नई वैश्विक–शक्तियों का दबाव और यूरोपीय राष्ट्रों के राजनीतिक अनुभव, आधुनिक इस्लाम के मन पर *इज्मा* के विचार के मूल्य तथा संभावनाओं को, प्रभावित कर रहे हैं। गणतांत्रिक भावना का विकास और मुस्लिम देशों में विधान सभाओं का धीरे–धीरे गठन होना, पहले से ही एक महत्वपूर्ण कदम है। *इज्तिहाद* की शक्ति को पाठशालाओं के व्यक्तिगत प्रतिनिधियों से मुस्लिम विधान सभाओं में स्थानांतरित कराना, जो आधुनिक समय में विरोधी संप्रदायों के विकास को देखते हुए, *इज्मा* का एकमात्र संभव रूप है और जो जन–साधारण से, मामलों में गहन–अंतर्दृष्टि के साथ, कानूनी चर्चा में योगदान को सुरक्षित करेगा। इस प्रकार से हम अकेले ही, अपनी कानूनी व्यवस्था में, जीवन की निष्क्रिय भावना को सक्रिय कर सकते हैं और इसे एक विकासवादी दृ ष्टिकोण दे सकते हैं।

इस्लामी कानून (*इत्तिहाद*) के सवालों पर, एक आस्था रखने वाले मुस्लिम के अधिकारों पर विचार करके और राय बनाकर तथा मुस्लिम विधानसभाओं में आम सहमति (*इज्मा*) बनाकर, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर लागू किया जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि इकबाल ने एक ऐसी इस्लामी राजव्यवस्था की कल्पना की थी जहाँ राजनीतिक सत्ता को नियंत्रित करने वाले मौलाना (*उलेमा*) न होकर, इस्लामी और आधुनिक न्यायशास्त्र के जानकार आम नागरिक थे। वास्तव में, वह मौलानाओं द्वारा राजनीति पर नियंत्रण को खतरनाक मानते हैं और गणतंत्रात्मक रूप से निर्णय लेने के पक्षधर थे।

इकबाल ने इस्लाम को धर्म, नैतिकता और राजनीति के मूलभूत सिद्धांतों के रूप में देखा। लेकिन अपने समय में उन्होंने इस तथ्य पर अफसोस जताया कि भारत में शैक्षणिक संस्थान पश्चिमी तर्ज पर बने थे। इस तरह की संस्थाएं, ऐसे व्यक्तियों का मंथन कर रही थीं जो पश्चिमी चेतना और राजनीतिक प्रणाली से पूरी तरह से प्रशिक्षित और आसक्त थे जिसने धर्म को राज्य से अलग कर दिया और लोगों को राष्ट्रीयता और नस्ल के आधार पर एक दूसरे से विभाजित कर दिया। इकबाल मुस्लिम पुरुषों के लिए ऐसे शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने की योजना बना रहे थे

जहां उन्हें इस्लामी नैतिकता, धर्म, कानून और आधुनिक ज्ञान के बारे में पढ़ाया जा सके।

इस प्रकार इकबाल का, मुसलमानों को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन, राष्ट्रवाद की पश्चिमी विचारधारा को चुनौती देने के बारे में भी है जो न केवल मुस्लिम राजनीति के लिए प्रासांगिक है बल्कि तीसरी दुनिया के सभी औपनिवेशिक देशों के लिए भी प्रासांगिक है जो राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर आधुनिकता और परंपरा के संकट से गुजर रहे हैं। इकबाल ने गैर–पश्चिमी अर्थात् प्राच्यवादी ज्ञान और राजनीतिक व्यवस्था के महत्व के समर्थन में तर्क दिये। पार्थ चटर्जी के शब्दों में, पश्चिमी राष्ट्रवाद के 'अमौलिक विमर्श' का आँख बंद करके पालन करने के बजाय उन्होंने, स्वयं के, अपने सांस्कृतिक संसाधनों और परंपराओं को बनाने के मामले पर बल दिया। लेकिन इकबाल को स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के समर्थक के रूप में देखना उचित नहीं होगा क्योंकि इकबाल ने पश्चिमी सार्वभौमिकता का विरोध, एक अन्य प्रकार की अर्थात् इस्लामी सार्वभौमिकता के माध्यम से किया था। इकबाल ने मुस्लिम समाज में भाषा और संस्कृति की एकरूपता के लिए तर्क दिया जो दक्षिण एशिया के संदर्भ में स्वयं समस्याएं खड़ी करते है जहां मुसलमान भाषा, संस्कृति और विश्वास के मामलों में विषम हैं।

11.4 आधुनिकता

समकालीन सामाजिक विज्ञानों और सुरूचिपूर्ण विषयों में 'आधुनिकता' शब्द –विशिष्ट विचारों, संस्थानों और प्रथाओं को संदर्भित करता है जो ज्ञानोदय के बाद यूरोप में उभरे। आधुनिकता व्यक्तिवाद, विज्ञान, लोकतंत्र, राष्ट्र–राज्यों, पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था, धर्म का राजनीति और सार्वजनिक जीवन के अधिकांश पहलुओं से अलगाव, धार्मिक विश्वास के बजाय तर्क पर आधारित व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के अधिकांश पहलुओं तथा स्वयं, स्वयं के इतिहास और सभी संभावित पहलुओं के प्रति समालोचनात्मक या स्व–मूल्यांकनात्मक दृष्टिकोण के उदय से जुड़ी है। आधुनिकता द्वारा निर्मित स्व–समालोचनात्मक रवैया, स्वयं भी कभी–कभी, आधुनिक विचारों की समालोचना प्रकट करता है। राजनीतिक क्षेत्र में आधुनिकता का अर्थ धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्र–राज्य, राजनीतिक और नागरिक अधिकारों के साथ एक सशक्त व्यक्ति, शासन के बजाय नियमन करने वाला एक राज्य, लोकतंत्र और मुक्त बाजार है। इस प्रकार, आधुनिकता और इसके संबंधित पहलू, आधुनिक राज्य सत्ता के साथ–साथ नौकरशाही और विश्वविद्यालय जैसी आधुनिक संस्थाओं की सांस्कृतिक, वैचारिक शक्ति और लगातार बढ़ती पूंजीवादी व्यवस्था की आर्थिक शक्ति से निकटता से जुड़े हुए थे। पश्चिम के उपनिवेशवाद और आर्थिक प्रभुत्व के साथ ही, एशियाई, अफ्रीकी और अन्य क्षेत्रों में आधुनिक विचारों और संस्थानों को अध्यारोपित और स्थापित किया गया।

इस इकाई में, अब तक की चर्चा से यह देखा जा सकता है कि इकबाल आधुनिकता के कई पहलुओं, विशेषकर, इसकी राजनीतिक विशेषताओं के अत्यधिक आलोचक थे। इकबाल द्वारा यह आलोचना एक मुस्लिम विचारक के दृष्टिकोण के तौर पर थी जिन्होंने इस्लाम में उन सांस्कृतिक, नैतिक और राजनीतिक संसाधनों को देखा जिससे पुरुषों में उच्च चेतना का विकास हो सके। इकबाल ने आधुनिकता के कई

पहलुओं को खारिज कर दिया जिन्हें निम्नलिखित तरीके से सूचीबद्ध किया जा सकता है:

– राष्ट्र–राज्य का वह प्रतिरूप जिसने मानवता को विभाजित किया

इकबाल ने इस्लामी नैतिक सार्वभौमिकता को बरकरार रखा।

– सामाजिक जीवन को निजी और सार्वजनिक में विभाजित करना

इकबाल ने धर्म को निजी तौर पर विभाजित करने का विरोध किया और तर्क दिया कि इस्लाम ने राजनीति, नागरिक–समाज और अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों की पेशकश की है।

– आध्यात्मिकता पर भौतिकता को वरीयता

इकबाल ने विज्ञान और औद्योगिक क्षेत्र में भौतिक प्रगति के महत्व को पहचाना लेकिन सुस्पष्ट किया कि आध्यात्मिक अनुभव मनुष्य की चेतना का एक हिस्सा होता है और इस्लाम ने विवेकहीन भौतिकवाद पर लगाम लगाने के लिए नैतिकता की पेशकश की।

और फिर भी, अपने विचारों के कई महत्वपूर्ण पहलुओं में, इकबाल एक 'आधुनिकतावादी' प्रतीत हुए। भले ही इकबाल धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित राजव्यवस्था की इच्छा जताते थे फिर भी उन्होंने प्रतिनिधात्मक लोकतंत्र का समर्थन किया और विचार दिया कि आधुनिक विधायिकाएं इस उद्देश्य को सबसे बेहतर तरीके से लागू कर सकती हैं। इकबाल के अनुसार, अनियंत्रित पूंजीवाद और मुक्त बाजारों के नतीजे से उत्पन्न, शोषण और असमानता का जवाब समाजवाद द्वारा दिया जा सकता है। अहम् या *खुदी* पर अध्ययन के दौरान, इकबाल *नीत्शे* और *बर्गसन* से काफी प्रभावित थे। इसलिए इकबाल को मूल्यों से भरे –'परंपरावादी' या 'आधुनिकतावाद विरोधी' शब्दों के साथ अंकित करना, इकबाल की पदावनति करना होगा। आधुनिकता का विचार, इकबाल के चिंतन के संदर्भ के तौर पर कार्य करता है और किसी निश्चित ढ़ाँचे के तौर पर फैसला व्यक्त करने के बजाय हमें उनके चिंतन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने की अनुमति देता है।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) ह्रदय के क्षेत्र पर इकबाल के जोर की व्याख्या कीजिए। यह आधुनिक ज्ञान के लिए एक चुनौती कैसे थी?

....
....
....
....
....

2) पश्चिमी लोकतंत्र के साथ इकबाल के जुड़ाव के बारे में लिखिए।

....
....
....
....
....
....

3) 'आधुनिकता' से आप क्या समझते हैं?

....
....
....
....
....
....
....

11.5 आकलन

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट है कि इकबाल के दार्शनिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक सरोकार मुस्लिम राज्य के निर्माण से *बहुत आगे* निकल गए। इसलिए अल्लामा इकबाल को, मुस्लिम राज्य की उनकी मांग के कारण, कम करना एक हानि है। यहां तक कि जब उन्होंने भारत *के भीतर* एक मुस्लिम राज्य के विचार को रखा तो, उनके अनुसार, यह क्षेत्रीय राष्ट्रवाद के विभाजनकारी विचार से और इस्लामी नैतिकता तथा कानूनों के कार्यान्वयन के लिए एक हद तक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए था जो उनके अनुसार सार्वभौमिक थे। यह गैर–इस्लामी धर्मों से घृणा के कारण नहीं था कि इकबाल ने भारत के भीतर एक इस्लामी राज्य या अखिल इस्लामवाद का समर्थन किया था बल्कि इसलिए कि इकबाल का विचार था कि मुस्लिम नैतिक–राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता है। अखिल इस्लामवाद पर उनके विचार हमें आज भी मुस्लिम राजनीति के पहलुओं को समझने में मदद करते हैं।

इकबाल एक सुदृढ़ बुद्धिजीवी थे जिन्होंने अपने समय की दार्शनिक चिंताओं को दूर करने का प्रयास किया जब पूर्व की सभ्यताएं और धर्म, पश्चिम की आधुनिकता के संपर्क में आने के कारण, संकट के दौर से गुजर रहे थे। यहां तक कि टैगोर जैसे विचारकों ने भी पश्चिमी राष्ट्रवाद की आलोचना प्रस्तुत की। इस प्रकार इकबाल, पश्चिमी आधुनिकता के प्रमुख तत्वों की आलोचना करने वाले, उपनिवेशवाद विरोधी विचारकों की कसौटी में एक स्थान रखते है। उनका चिंतन हमें यह याद दिलाने का भी काम करता है कि राष्ट्रवाद जैसा विचार, पूरे इतिहास में मौजूद होने के बजाय, काफी हद तक वर्तमान का हैं। ऐसी उपनिवेशवादी सोच का एक उदाहरण प्रस्तुत करने वाले, विनायक दामोदर सावरकर थे जिन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि भारतीय राष्ट्र अनादि काल से अस्तित्व में है। अपने पूरे जीवनकाल में इकबाल,

इस्लामी परंपरावादियों और आधुनिकतावादियों, दोनों के साथ वाद–विवाद में लगे रहे।

इकबाल के अधिकांश विचार इस्लामी सिद्धांतों और कानूनों पर स्थापित समुदाय के पक्ष तक सीमित था। यद्यपि उन्होंने दावा किया कि इस्लाम सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित है और वह सार्वभौमिक भाईचारे की शिक्षा देता है परन्तु व्यावहारिक रूप से समुदाय केवल उन लोगों के लिए खुला था जो इस्लाम में विश्वास करते थे। इसके अलावा, विशेष रूप से, संस्कृति और भाषा में एकरूपता की एक श्रेणी थी जिसे इकबाल चाहते थे। इकबाल के चिंतन में *महिलाओं* की *उल्लेखनीय अनुपस्थिति* है। वर्तमान समय में, इकबाल पुरुषों और महिलाओं की पितृसत्तात्मक भूमिकाओं को बनाए रखने के लिए बल देते हैं और उन्हें पालनकर्ताओं की भूमिका में देखते हैं। उनके अनुसार, महिलाओं के लिए समुचित क्षेत्र गृहस्थी और मातृत्व था। उन्होंने विचार था कि उच्च शिक्षा महिलाओं को मातृत्व की भूमिका से दूर कर देगी। जब महिलाओं की चर्चा होती है तो इकबाल की सार्वभौमिकता और सिद्धांतों की समानता लड़खड़ाने लगती हैं और इस प्रकार यह, नैतिकता और राजनीति की, उस व्यवस्था की सीमाओं को भी दिखाता हैं जिन्हें इकबाल ने थाम रखा था।

11.6 सारांश

इस इकाई में, इकबाल को एक गतिशील और अनवरत विचारक के रूप में समझने का प्रयास किया है जिन्होंने मुस्लिम समुदाय और इस्लाम, ऐसा धर्म जिसमें वह विश्वास करते थे और प्यार करते थे, के लिए आध्यात्मिक, नैतिक और राजनीतिक कार्यों की रूपरेखा तैयार करने का महान कार्य किया। समुदाय, धर्म और आधुनिकता के सभी पहलुओं में इकबाल ने प्रभावशाली पश्चिमी विचारों को चुनौती प्रदान की। उन्होंने, सबसे कठोर आलोचना क्षेत्रीय राष्ट्र–राज्यों के विचार के खिलाफ की जिसने मानवता को विभाजित किया, धर्म और नैतिकता को निजी क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया और आध्यात्मिक प्रगति और रहस्यमय अनुभव के बजाय भौतिक विकास और अनुभवजन्य विज्ञान पर जोर दिया।

11.7 संदर्भ

- एल–रॉएहेब. के. और इन श्मिटके. एस. (2019). *द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ इस्लामिक फिलॉसफी.* न्यूयॉर्क. एनवाईः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- देवजी. एफ. (01 जनवरी, 2010). मुस्लिम सार्वभौमिकता की भाषा. *डायोजनीज,* 57, 2, 35–49.
- हिलियर, एच.सी. (2017). *मुहम्मद इकबाल.* एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस.
- इकबाल, एम., और कांडा, के.सी. (2006). *अल्लामा इकबाल, सेलेक्टेड पोएट्रीः टेक्स्ट, ट्रांसलेसन एंड ट्रांसलिटरेसन.* एल्गिन, आईएलः न्यूडॉन प्रेस.
- इकबाल, एम., किरनन, वी.जी., इकबाल, एम., और इकबाल, एम. (2015). *पोयम्स फ्रॉम इकबालः रेन्डरिंगस् इन इंग्लिस वर्स विद् कम्परेटिव उर्दू टेक्सट.* श्रीनगर, कश्मीर, भारतः गुलशन बुक्स कश्मीर.

- इकबाल, एम., डार, बी.ए., और अल्लामा इकबाल मेमोरियल उर्दू संग्रह. (2005). *लेटर्स ऑफ इकबाल.* लाहौरः इकबाल अकादमी पाकिस्तान.
- इकबाल, एम. (2003). *द रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ रेलिजियस थॉट इन इस्लाम.* नई दिल्ली.
- इकबाल, एम (1977). *सीक्रेट्स ऑफ कलेक्टिव सेल्फः बीइंग ए डिस्क्रिप्टिव एंड कॉम्प्रिहेंसिव ट्रांसलेशन ऑफ अल्लामा इकबालस् रुमुज–ए–बेखुदी.* लाहौरः इकबाल एकेडमी.
- मैकडरमोट, आर.एफ., गॉर्डन में, एल.ए., एम्ब्री में, ए.टी., प्रिटचेट में, एफ. डब्ल्यू., और डाल्टन में, डी. (2015). *सोर्सेज ऑफ इंडियन ट्रेडिशन्स्ः माडर्न इंडिया, पाकिस्तान एण्ड बांग्लादेश.* न्यूयॉर्क. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.
- शेरवानी, एल.ए. (1977). *स्पीचेच्, राइटिंग्स् एण्ड स्टेटमेन्ट्स ऑफ इकबाल.* तीसरा संस्करण, (संशोधित और वृहद्), लाहौरः इकबाल अकादमी.
- सिंह, आई. (1997). *द ऑरडेन्ट पिलीग्रिमः एन इन्ट्रोडक्शन टू द लाइफ एण्ड वर्क ऑफ मोहम्मद इकबाल.* दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- शिविआ, आई. एस. (2017). *द पॉलिटिकल फिलॉसफी ऑफ मुहम्मद इकबालः इस्लाम एंड नेशनलिज्म इन लेट कॉलोनियल इंडिया.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में शामिल होना चाहिएः

- क्षेत्र, भाषा, जाति विभाजन के आधार पर अन्य समुदायों की प्रकृति
- आस्था पर आधारित इस्लामी समुदाय की प्रकृति
- इकबाल के अनुसार व्यक्तिगत विकास में समुदाय का महत्व
- व्यक्तिगत अहम् (*खुदी*) और सामाजिक आध्यात्मिक मूल्यों (*बेखुदी*) के बीच सामंजस्य

2) आपके उत्तर में शामिल होना चाहिएः

- इस्लामी समुदाय का आध्यात्मिक और भौतिक होना
- अन्र्त–राष्ट्रीय और सार्वभौमिक
- आस्था आधारित
- खुला है क्योंकि इस्लाम सबके लिए खुला है
- विश्वासियों की समानता और भाईचारे पर आधारित

3) आपके उत्तर में शामिल होना चाहिएः

- राष्ट्रवाद, एक पाश्चात्यवादी विचार के रूप में

- राष्ट्रवाद ने भाषा और क्षेत्र के आधार पर अलग पहचान बनाई
- राष्ट्रवाद ने इस्लाम की सार्वभौमिकता को चुनौती दी
- आधुनिक राष्ट्र राज्य ने धर्म को निजी क्षेत्र में बदल दिया

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में शामिल होना चाहिएः

- रहस्यमय और आध्यात्मिक अनुभव पर इकबाल का जोर
- अनुभवजन्य और आध्यात्मिक अनुभव के बीच अंतर
- भौतिकवादी दुनिया में नैतिक कार्रवाई के स्रोत के रूप में हृदय की प्रभुता
- ज्ञान के आधुनिक रूपों द्वारा आध्यात्मिक अनुभव को नकारना

2) आपके उत्तर में शामिल होना चाहिएः

- *इज्मा* की इस्लामी अवधारणा और आधुनिक लोकतंत्र में आम सहमति के बीच संपर्क
- *इज्मा* को साकार करने के साधन के रूप में विधान सभाएं
- *उलेमा* पर विधानसभाओं को इकबाल की वरीयता
- नैतिक लोकतंत्र के आधार के रूप में इस्लाम

3) आपके उत्तर में शामिल होना चाहिएः

- ज्ञानोदय के बाद यूरोप में आधुनिकता का उदय
- ईश्वर से मनुष्य की ओर ध्यान स्थानांतरण
- आधुनिकता की विशेषताएं
- राजनीतिक रूपीय आधुनिकता की विशेषता – राष्ट्र राज्य, लोकतंत्र आदि

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY